P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# बिहार की साम्प्रदायिक राजनीति का एक विश्लेषण

**सुधीर कुमार**
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
ल. ना. मि. विश्वविद्यालय,
कॉमेश्वर नगर,
दरभंगा, बिहार, भारत

**सारांश**

प्रस्तुत शोध–पत्र में बिहार की राजनीतिक स्थिति को समझने का प्रयास किया गया है तथा इसको प्रभावित करने वाले कारकों में जाति और संप्रदाय के प्रभावों का अध्ययन केन्द्रित किया गया है तथा यह जानने का प्रयास किया गया है कि बिहार की राजनीति में साम्प्रदायिकता की क्या भूमिका है? साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि अन्य राज्यों की अपेक्षा बिहार की राजनीति में साम्प्रदायिकता की भूमिका में भिन्नता के तत्व क्या हैं? चूँकि वर्तमान में बिहार की राजनीति के अंतर्गत विद्यमान अनेक समस्याओं में एक साम्प्रदायिकता भी है अतः इस शोध–पत्र के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार अनेक ऐतिहासिक और समकालीन मुद्दों ने बिहार की राजनीति में साम्प्रदायिकता के विकास में योगदान दिया है।

**मुख्य शब्द** : साम्प्रदायिक राजनीति, समस्या, विश्लषण, समाधान।

**प्रस्तावना**

भारत में साम्प्रदायिकता का इतिहास बहुत पुराना है, इसकी शुरुआती कारणों में हम पश्चिमी इस्लामिक आक्रमणकारियों की नीतियों को जिम्मेदार मान सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज में विभिन्न धर्मों के लोगों में अविश्वास और द्वेष का भाव उत्पन्न हुआ; परन्तु यह साम्प्रदायिकता के विकास का प्रारंभिक चरण था।

साम्प्रदायिकता के विकास का अधिक संगठित और विकसित स्वरूप ब्रिटिश काल में दिखाई देता है, जब ब्रिटिश द्वारा 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत भारतीय समाज को साम्प्रदायिक आधार पर विभाजित करने का प्रयास किया गया। इसका एक स्वरूप हमें इतिहास के विभाजन के रूप में देखने को मिलता है। इसके अंतर्गत ब्रिटिश द्वारा भारतीय इतिहास को प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत के रूप में हिन्दू शासन, मुस्लिम शासन और ईसाई शासन के रूप में विभाजित किया गया।

जिन्ना जैसे साम्प्रदायिक व्यक्ति को अधिक प्रश्रय देना व उसे साम्प्रदायिक राजनीति की खुली छूट देना भी ब्रिटिश रणनीति का हिस्सा था। इस राजनीति ने भारतीय मुस्लिम समुदाय को अपनी राष्ट्रीय आस्था को पुनर्निर्धारित करने के लिए विवश किया। इस प्रकार की स्थिति में 'हिन्दू महासभा' जैसे संगठनों ने भी आग में घी डालने का काम किया। जिसका दुष्परिणाम भारत के विभाजन के रूप में देखने को मिला। इस ब्रिटिश साजिश और जिन्ना की राजनीति का प्रभाव आज भी कहीं न कहीं भारतीय समुदाय पर देखने को मिलता है और यह अक्सर अपने चरम स्वरूप को धारण कर साम्प्रदायिक हिंसा का रूख अख्तियार कर लेता है। अतः भारत में प्रायः साम्प्रदायिक हिंसा देखने को मिल जाती है। राजनीति के साम्प्रदायीकरण और धर्म के राजनीतिकरण के परिणामस्वरूप इस प्रकार की हिंसा का प्रभाव राजनीति में व्यापक तौर पर देखने को मिलता है।

**बिहार में साम्प्रदायिक हिंसा**

साम्प्रदायिक राजनीति के प्रभाव से बिहार राज्य भी अछूता नहीं रहा है, अर्थात् बिहार में भी साम्प्रदायिकता का प्रभाव देखने को मिलता है। इतिहास में देखें तो स्वतंत्रता के पूर्व अलग पाकिस्तान की मांग को लेकर चलाये गये 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' के परिणामस्वरूप 1946 ई. में बिहार में दंगा देखने को मिला जो उस समय की कलकत्ता में हुई सिलसिलेवार हत्या के प्रतिक्रिया स्वरूप हुई थी। परन्तु इसके बाद बिहार में कोई बड़ा दंगा देखने को नहीं मिलता। इसका एक मात्र अपवाद है– 'भागलपुर दंगा' जो 1989 ई. में हुआ। यह दंगा राम मंदिर आन्दोलन की पृष्ठभूमि में हुआ। इसके अतिरिक्त यदि छोटे मोटे दंगों को छोड़ दिया जाय तो बिहार में कोई बड़ा दंगा नहीं हुआ।

यहाँ यह समझने की आवश्यकता है कि धर्म और राजनीति के मेल से ही साम्प्रदायिकता का विकास होता है, सत्ता प्राप्ति के लिए धर्म का दुरुपयोग किया जाता है। तथा जब राजनीति अपने हितों की पूर्ति के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार हो जाय तो दंगा कभी भी कराया जा सकता है। अतः भारत में हुए किसी भी दंगे की बात करें तो उसमें राजनीति की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भूमिका देखी जा सकती है। 1946 ई. का बिहार दंगा जहाँ जिन्ना की राजनीति और उनके द्वारा शुरू किये गये 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का परिणाम थी, जबकि भागलपुर दंगा के पीछे भाजपा द्वारा चलाये जा रहे 'राम मंदिर आन्दोलन' जनित वातावरण था।

**बिहार की राजनीति में जाति बनाम सम्प्रदाय**

किसी भी समाज में वह मुद्दा निर्णयकारी साबित होता है जो समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पक्षों को अधिक मजबूती से प्रभावित करता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारतीय राजनीति में सम्प्रदाय की महत्वपूर्ण भूमिका है, परन्तु जब हम बिहार के विशेष सन्दर्भ में अध्ययन करते हैं तो जाति की तुलना में सम्प्रदाय द्वितीय स्थान को प्राप्त हो जाता है। क्योंकि बिहार की सामाजिक संरचना ऐसी है कि यहाँ किसी व्यक्ति की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर जाति का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रभाव है। बिहार में सामान्यतः दो वर्ग देखने को मिलते हैं– प्रथम, उच्च वर्ग जो आर्थिक स्थिति से संपन्न है; इस वर्ग के पास या तो कृषि–योग्य भूमि अधिक मात्रा में है, या फिर यह वर्ग शिक्षा के माध्यम से उच्च पदों पर विद्यमान है। इस उच्च वर्ग में कुछ ऐसे अन्य लोग भी हैं जो पूंजी के कारण शहरी क्षेत्रों में व्यापार में लगे हैं। द्वितीय वर्ग है, जो भूमिहीन अथवा बहुत ही कम भूमि का मालिक है, जो कि उनके जीवन यापन के लिए पर्याप्त नहीं है। अतः ऐसी स्थिति में यह वर्ग या तो बड़े कृषकों के यहाँ कृषक मजदूर बनकर जीवन–यापन करता है या फिर देश के अन्य भागों में मजदूरी करता है।

चूँकि बिहार में भूमि–सुधार कानून (Land Reform Act) लागू नहीं है इस कारण ऊँची जातियां आज भी अधिकांश भूमि की मालिक है। इसके अतिरिक्त यादव, कुर्मी जैसी कुछ जातियां भी बड़े पैमाने पर कृषि योग्य भूमि की मालिक है और कृषि कार्य में संलग्न हैं, परन्तु अन्य जातियों की स्थिति हीन है। अतः बिहार में पिछड़ी और अनुसूचित जातियों को उन जातियों से शिकायत है जो भूमि–संपन्न हैं। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बिहार में हितों का संघर्ष जातियों के मध्य अधिक है, बजाय दो सम्प्रदायों के मध्य के ऐसी परिस्थिति के कारण जातीय कारक सांप्रदायिक कारक से अधिक बलवती प्रतीत होता है।

वहीं दूसरी तरफ मुस्लिम जनसंख्या की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को देखें तो अधिकांश जनसँख्या की स्थिति पिछड़ी या अनुसूचित जातियों की ही भांति है। अतः अधिकांश मुस्लिम आबादी का हित पिछड़ी और अनुसूचित जातियों के हितों के ही अनुरूप है। दूसरी, यह भी समझने कि आवश्यकता है कि नब्बे के दशक में 'मंडल और कमंडल' की राजनीति ने एक तरफ जहाँ मुस्लिम वोट को भारतीय जनता पार्टी के विरुद्ध ध्रुवीकृत किया वहीं हिन्दू वोट का सवर्ण बनाम पिछड़ा के रूप में विभाजित किया। इस परिस्थिति ने स्वाभाविक तौर पर लालू प्रसाद जैसे नेताओं को राजनीति चमकाने का अवसर दिया। इसी समय राजद के माई (MY) फैक्टर ने मुस्लिम और यादव वोट को एकजुट करने का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बिहार की राजनीति में हिन्दू बनाम मुस्लिम के स्पष्ट वातावरण का अभाव दिखता है।

जोया हसन ने लिखा है कि मंडल कमीशन की अनुशंसा लागू होने के बाद अन्य पिछड़ी जातियों को राजनीति की मुख्य धारा में लाने हेतु आरक्षण के अलावा राजनीतिक दलों ने भी सार्थक प्रयास किये। उन्हे प्रयाप्त मात्रा में लोकसभा और विधान सभाओं के चुनाव में टिकट दिये गये और वे जीते भी। परन्तु मुसलमानों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने के कोई भी प्रयास नहीं हुए। फलतः अभी भी मुसलमानों का प्रतिनिधित्व नगण्य है। मुसलमानों के बारे में पूरा राजनीतिक विमर्श सिर्फ दो बातों पर केन्द्रित रहा– उनकी सुरक्षा और उनकी विशिष्ट पहचान एवं जीवन शैली को बचाना। इसी कारण सत्ता में हिस्सेदारी एवं नौकरियों एवं शिक्षा में उनको समुचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया।

**बिहार की जनसंख्या में विभिन्न सम्प्रदायों के बीच जनसंख्या अनुपात**

बिहार की राजनीति में सामाजिक संरचना का पर्याप्त महत्व है, इसका कारण वोट बैंक विभिन्न जातीय और सांप्रदायिक समूहों में बंटा हुआ है और यह समूह पर्याप्त मजबूती को प्राप्त है। अतः जब भी बिहार के मतदान व्यवहार को देखना हो तो उसकी सामाजिक संरचना को नजरअंदाज़ नहों किया जा सकता। इस हेतु बिहार की जनसँख्या में जातिगत और साम्प्रदायिक अनुपात को नीचे प्रस्तुत किया गया है जो विश्लेषण में सहायक सिद्ध होंगे। ये आंकड़े निम्नवत हैं:

| Religion | Percentage |
|---|---|
| Hindu | 82.69% |
| Muslim | 16.87% |
| Christian | 0.12% |
| Sikh | 0.02% |
| Buddhist | 0.02% |
| Jain | 0.02% |
| Other Religions | 0.01% |
| Not Stated | 0.24% |

**Source**:
https://www.census2011.co.in/data/religion/state/10-bihar.html

**Caste Demographics**

| **Castes of Bihar** | |
|---|---|
| **Caste** | **Population (%)** |
| OBC/EBC | 51% (Yadavs -14.4%, kushwahas(Koeris) -6.4%,Kurmis-4%) ( EBCs - 26%(18% Hindu + 8% Muslim) -includes |

| | |
|---|---|
| | , some Muslims caste also come under EBC category. |
| Mahadalits* + Dalits (SCs) | 16% (includes Dusadh- 4%, Musahar- 2.8%) |
| Muslims | 16.9% |
| Forward caste | 17% (Bhumihar-4.7%, Brahmin-5.7%, Rajput-5.2%, Kayastha-1.5%) |
| Adivasis (STs) | 1.3% |
| Others | 0.4% (include Christians,Sikhs,Jains) |

**Source**:
https://ipfs.io/ipfs/QmXoypizjW3WknFiJnKLwHCnL72vedxjQkDDP1mXWo6uco/wiki/Demographics_of_Bihar.html

उपर्युक्त आकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि बिहार में मुस्लिम वोट (16.87%) इस स्थिति में नहीं है कि बिहार की राजनीति में स्वयं के दम पर कोई मजबूत भूमिका निभा सके। चूँकि बिहार में यादव वोट भी अच्छी–खासी संख्या (14.4%) में है। अतः माई फैक्टर ने न सिर्फ लालू प्रसाद यादव जैसे नेताओं को सत्ता में आने का अवसर दिया बल्कि राजनीति के साम्प्रदायिक स्वरूप को जातीय स्वरूप में परिवर्तन करने में भी भूमिका निभाई। जातीय आधार पर बंटे समाज की ध्रुवीयता अत्यंत कठिन है। अतः भाजपा जैसी पार्टियों को इसका सीधा नुकसान उठाना पड़ता है। जिन राज्यों में जातीय राजनीति चरम पर है वहां भाजपा का प्रदर्शन अच्छा नहीं होता। अतः भाजपा जैसी पार्टी बिहार में अपनी उतनी अधिक मजबूत स्थिति को नहीं प्राप्त कर सकी।

**अन्य आधार**

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त बिहार की राजनीति का एक अन्य आयाम भी है जिस आधार पर बिहार के पूर्वी हिस्सा और पश्चिमी हिस्सा में अंतर दिखाई देता है। बिहार के पूर्वी हिस्से में अनेक ऐसे जिले हैं जहाँ स्वाभाविक तौर पर मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात अधिक है जबकि बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण यह अनुपात और अधिक बिगड़ गया है। अतः इन जिलों के बावजूद मतदान के साम्प्रदायिक आधार पर ध्रुवीकरण की प्रवृति में बढ़ोत्तरी देखने को मिलती है। इसके अंतर्गत् किशनगंज, पूर्णिया आदि जिले हैं।

2019 में होने वाले लोकसभा चुनाव के कारण बिहार में भी सांमप्रदायिक ध्रुवीकरण के प्रयास तेज हो रहे हैं। 17 मार्च 2018 को भागलपुर में केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे के पुत्र अर्जित शास्वत की अगुआई में बी.जे.पी., बजरंगदल, आर.एस.एस. कार्यकर्ताओं का एक धार्मिक जुलूस निकला गाना बजाने क मुद्दे पर दो सम्प्रदाय के लोग टकरा गए । फलतः 2 पुलिसकर्मियों सहित 5 लोग जख्मी हो गए । गाड़ियों और दुकाने धू–धूकर जलने लगी । इसी प्रकार रामनवमी के मौके पर 25 मार्च 2018 को औरंगाबाद में शोभायात्रा के दौरान पथराव हुआ और दंगा भड़क गया । इसी प्रकार सीतामढ़ी में भी तनाव एवं दंगा देखने को मिला।

**निष्कर्ष**

इस प्रकार हम देखते हैं कि बिहार की सामाजिक संरचना उत्तर भारत के अन्य राज्यों विशेषकर उत्तर प्रदेश के अनुरूप होते हुए भी राजनीतिक संरचना और मतदान व्यवहार भिन्नता को प्राप्त है। उत्तर भारत के अन्य राज्यों से यदि तुलना किया जाय तो यह समानता देखने को मिलती है कि अन्य राज्यों की भांति बिहार में भी मुस्लिम वोट का समर्थन उस राजनीतिक दल को जाता है जो दल भारतीय जनता पार्टी की प्रमुख प्रतिद्वंदी हो। यदि उत्तर प्रदेश की स्थिति से तुलना करें तो दोनों प्रदेशों में यह समानता है कि दोनों राज्यों में पिछड़ा–मुस्लिम गठजोड़ विशेषकर "MY Factor" (मुस्लिम–यादव गठजोड़) देखने को मिलता है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

*Brass, P. R. (2005). Language, religion and politics in North India. iUniverse.*
*Gopal, S. (Ed.). (1993). Anatomy of a confrontation: Ayodhya and the rise of communal politics in India. Palgrave Macmillan.*
*Hasan, Z. K. (1982). Communalism and communal violence in India. Social Scientist, 25-39.*
*Sajjad, M. (2014). Muslim politics in Bihar: Changing contours. Routledge India.*
*https://www.sciencespo.fr/mass-violence-war-massacre-resistance/printpdf/3196*
*https://www.civilserviceindia.com/subject/Essay/communal_politics_and_caste_politics_its_impact_on_the_voter.html*
*http://re.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Wp366.pdf*
*http://ir.amu.ac.in/989/1/T%206101.pdf*
*https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/13602000601141323?src=recsys*
*http://kki.hu/assets/upload/45_KKI_Analyses_IND_elections_Juhos_20151126.pdf*
*http://www.pprc.in/upload/Bihar%20-%20Final%20report.pdf*
*http://www.ispepune.org.in/jis108pdf/Bihar.pdf*
*https://www.thehindubusinessline.com/news/national/bihar-poll-its-a-yadavs-vs-upper-castes-battle/article7681965.ece*
*हसन जोया (2014) पॉलिटिक्स ऑफ इनक्लूजन (नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस)*
*सिंह अभयनारायण (29.03.18) क्विन्ट (हिन्दी)*